आज गोरखपुर
गोरखपुर, शनिवार, ३० सितम्बर, २०२३

हमारी संस्कृति में वैद्य का स्थान गुरू तुल्य-प्रो.एके सिंह

गोरखपुर,२९ सितम्बर। युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ की ५४ वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की ९वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह के अंतर्गत आयोजित संगोष्ठी के क्रम में तीसरे दिन आयुर्वेद संपूर्ण आरोग्यता की गारंटी विषयक संगोष्ठी के मुख्य वक्ता आयुष विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. ए. के. सिंह ने कहा कि आयुर्वेद शरीर रूपी मशीन को संचालित करने के लिए एस ओ पी बताता है, साथ ही शरीर के आरोग्यता की गारंटी भी देता है । भारत देश में हजारों वर्ष पूर्व से यह चिकित्सा पद्धति सफलता पूर्वक चलाई जा रही है। बीच में हम इससे दूर हो गए थे किंतु वर्तमान सरकार के प्रयास से धीरे-धीरे उस प्राचीन पद्धति की ओर लौट रहे हैं। हमारी संस्कृति में वैद्य का स्थान गुरुतुल्य बताया गया है। शास्त्रों में देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमार का वर्णन मिलता है।

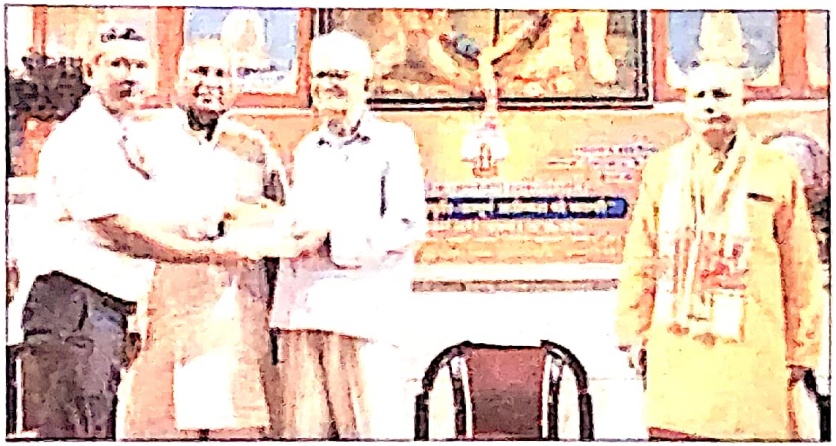

◆ आयुर्वेद सम्पूर्ण आरोग्यता की गारंटी विषय संगोष्ठी

सवाई आगरा से पधारे ब्रह्मचारी दासलाल जी ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति है । माना जाता है कि ब्रह्मा जी ने सृष्टि करने के पश्चात जीवों को स्वस्थ रखने के लिए आयुर्वेद का ज्ञान प्रदान किया था। हमारे शरीर में वात, पित्त और कफत्रिदोष होते हैं। इनको अपने आहार विहार से सामान रखने से रोग नहीं होते हैं । महर्षि सुश्रुत जो प्रथम शल्य चिकित्सक अर्थात् सर्जन थे कहते हैं कि जिसके शरीर में दोष अग्नि, धातु,मल और क्रियाएं समान हो तथा इंद्रिय मन और आत्मा प्रसन्न हो तो उसे स्वस्थ कहा जाता है। आचार्य चरक विश्व के प्रथम फिजिशियन थे। कटक उड़ीसा से पधारे महंत शिवनाथ ने कहा कि आयुर्वेद से योग को अलग नहीं किया जा सकता । आसन, प्राणायाम और संतुलित दिनचर्या स्वस्थ रहने के सबसे उपयोगी साधन है। आयुर्वेद दवाओं से अधिक परहेज पर ध्यान देता है। आयुर्वेद और योग जीवन को सदैव नवीनता प्रदान करते हैं। आयुर्वेद से शरीर स्वस्थ होता है तो योग से मन स्वस्थ और शांत होता है। इन दोनों का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। हम अपने जीवन में आयुर्वेद और योग को अपनाएं तो संपूर्ण जीवन निरोग रहते हुए आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त कर सकते हैं।विशिष्ट वक्ता गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान सोनबरसा के प्रधानाचार्य डॉ मंजूनाथ ने कहा कि स्वास्थ्य का स्वस्थ रक्षण करना ही आयुर्वेद है । आयुर्वेद हमारे आरोग्यता को पूर्ण बनाए रखता है। आरोग्यता अर्थात् हमारे शरीर के सभी अंगए सभी इंद्रिय अपने-अपने कार्य सही ढंग से करते रहें। आयुर्वेद में न केवल हमारे स्थूल शरीर के स्वस्थ रहने की बात की जाती है अपितु हमारा मन कैसे प्रसन्न व स्वस्थ रहेगा उसके उपाय पर भी विचार करता है। हमारी आरोग्यता में दिनचर्या का भी बहुत महत्व है। आयुर्वेद में दिनचर्या और ऋतुचर्या को जीवन का आधार बताया गया है। हमारी दिनचर्या संयमित रहती है तो मन भी प्रसन्न रहता है। मन जब चिंता मुक्त रहता है तो वह हमें जीवन में अनेक रोगों से बचाता है। आयुर्वेद में आहार एनिद्रा और दिनचर्या इन तीनों को संयमित रखने का निर्देश दिया गया है। यदि हमारा आहार शुद्ध है संयमित है तो रक्तचापए मधुमेह जैसे खतरनाक रोग हमें ग्रसित नहीं करते। आहार के साथ हमारा विहार भी शुद्ध होना चाहिए। विहार शुद्ध होने पर मन स्वस्थ एवं प्रसन्न होता है। आयुर्वेद में प्रज्ञापराध का वर्णन है यदि हम जानते हुए गलत आहार विहार करते हैं तो वह प्रज्ञापराध कहा जाता है । इस अपराध से प्रकृति हमसे रुष्ट हो जाती है। काम, क्रोध,लोभ ,मोह आदि दुर्गुणों से मुक्त रहने की विधि आयुर्वेद में बताई गई है। यदि ये दुर्गुण शरीर में होते हैं तो गंभीर बीमारियों को पैदा करते हैं । आयुर्वेद में पंचकर्म का वर्णन है जिससे विभिन्न रोगों का इलाज किया जाता है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष व पूर्व कुलपति प्रो उदय प्रताप सिंह ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति है। यह पूर्णतया प्राकृतिक और आध्यात्मिक है। इस पद्धति में हमारे पर्यावरण में विद्यमान वनस्पतियों औषधीयों व तत्वों के माध्यम से ही रोगों का उपचार बताया गया है । प्रकृति में विद्यमान हर वनस्पतियां ईश्वर के द्वारा हम लोगों को दिया गया वरदान है । कोई ऐसी वनस्पति नहीं है जो औषधि के रूप में न हो।

इस अवसर पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, कालीबाड़ी के महन्त रविन्द्र दास, महंत संतोषदास सतुआ बाबा, महंत पंचाननपुरी जी से मंचासीन रहे वैदिक मंगलाचरण डा. रंगनाथ त्रिपाठी, गोरक्षाष्टक पाठ आदित्य पांडेय व गौरव तिवारी तथा संचालन माधवेंद्र राज ने किया।